पश्चिम बंगाल के दिघा में मात्स्यिकी क्षेत्र में महिलाओं की सहभागिता

स्वातिप्रियंका सेन*, ज्ञानरंजन दास, मधुमिता दास, राजेश कुमार प्रधान, बिश्वजित दास और शुभदीप घोष

भा कृ अनु प- केन्द्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान पुरी क्षेत्र केन्द्र, पुरी, ओड़ीषा

संपर्क का पताः swatipriyank1a@gmail.com

भारत में मात्स्यिकी सकल घरेलू उत्पाद का 2.5% है और देश के कई ग्रामीण गरीबों के लिए सशक्त आय और रोज़गार के अवसर प्रदान करती है। केवल भारत में ही नहीं, बल्कि दुनिया भर मात्स्यिकी क्षेत्र में महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका है। पुरुष मुख्यतः समुद्र, नदियों और झीलों में मत्स्यन कार्य में लगे होते हैं, लेकिन महिलाएं ज्यादातर तटीय क्षेत्रों में तथा मुहानों एवं पश्चजलों से मछली और चिंगट बीजों के संग्रहण में लगी होती हैं। महिलाओं ने पख मछली और कवच मछली पालन की गतिविधियों में स्वयं शामिल होकर जलजीव पालन में भी उनकी आजीविका सुरक्षित की है। एफ ए ओ के अनुसार मछली प्रसंस्करण का 90% कार्य महिलाओं द्वारा किया जाता है। अन्य अनुमान भी यह दिखाते हैं कि विश्व व्यापक तौर पर मात्स्यिकी के क्षेत्र में, फसल संग्रहणोत्तर गतिविधियों को भी सम्मिलित कराते हुए, 47% श्रमिक महिलाएं हैं। अतः मात्स्यिकी क्षेत्र के प्रग्रहण, पालन तथा प्रसंस्करण के पहलुओं में उनकी सक्रिय सहभागिता देखी जा सकती है। लेकिन कई क्षेत्रों में महिलाओं की सहभागिता की ओर ध्यान नहीं दिया जाता है।

पश्चिम बंगाल भारत के पूर्वी भाग में बंगाल की खाड़ी से घिरा हुआ स्थित है। राज्य की विशाल जल संसाधन क्षमता है, जिसके उपयोग से, यहाँ प्रग्रहण तथा पालन मात्स्यिकी की बड़ी संभावना है। राज्य की तटरेखा 157.5 कि.मी. की है, और दक्षिण 24 परगानास, उत्तर 24 परगानास और इससे पूर्व मेदिनीपुर जिलों के गरीब महिलाओं को आजीविका और निर्वाह प्रदान की जाती है। समुद्री मात्स्यिकी जनगणना के अनुसार पूर्व मेदिनीपुर जिले में 1357 महिलाएं मछली विपणन, 922 जाल की मरम्मत के कार्य, 1891 प्रसंस्करण/उपचार, 563 चिंगट के छिलका उतारने के कार्य, 1452 श्रम कार्य और 85 मात्स्यिकी से जुड़े हुए अन्य कार्यों में लगी हुई हैं।

चित्र 1. बम्बिल मछली सुखाने के कार्य में लगी हुई महिलाएं

चित्र 2. सुखाने के बाद मछली की छंटाई

पश्चिम बंगाल के लोग प्रोटीन के स्रोत के रूप में नियमित आहार में पसंदीदा भोजन के रूप में मछली को शामिल करते हैं। कुल मछली पकड़ का 78% ताज़ी स्थिति में, 6% सूखी स्थिति में और शेष हिमशीतन करके खपत किया जाता है। भारत में पश्चिम बंगाल राज्य से मछली उत्पादन और निर्यात करने में पूर्व मेदिनीपुर जिले का प्रमुख स्थान है। दिघा पश्चिम बंगाल का सबसे बड़ा मात्स्यिकी केन्द्र है, जहाँ सबसे बड़ा प्रमुख मछली अवतरण केन्द्र और राज्य का सबसे बड़ा नीलामी बाज़ार हैं। इसलिए, दिघा में अधिक महिलाएं मात्स्यिकी क्षेत्र, अधिकतर कारीगर और औद्योगिक क्षेत्र, से जुड़ी हुई देखी जाती हैं। महिलाएं, जो भारत की आबादी का आधा हिस्सा है, अर्थव्यवस्था के कृषि क्षेत्र के एक घटक के रूप में विकास की निरंतरता को सुनिश्चित करते हुए मात्स्यिकी के परिचालन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। पूर्व मेदिनीपुर के मात्स्यिकी क्षेत्र में महिलाओं की सहभागिता का प्रतिशत काफी अधिक होने पर भी, दीर्घ काल से लेकर यह अगोचर था। इसलिए वर्तमान अध्ययन पश्चिम बंगाल के दिघा जिले में महिलाओं की सामाजिक स्थिति और समुद्री मात्स्यिकी क्षेत्र में महिलाओं की भूमिका पर अवलोकन करने के लिए आयोजित किया गया। इस अध्ययन में महिलाओं की शैक्षिक स्थिति, मात्स्यिकी की विभिन्न गतिविधियों में सहभागिता, समस्याओं और भुगतान से संबंधित सूचनाएं संग्रहित करने का प्रयास किया गया है। इसके लिए एक संरचित प्रश्नावली तैयार की गयी। ऊपर व्यक्त किए गए पहलुओं पर तैयार की गयी प्रश्नावली के अनुसार महिलाओं का साक्षात्कार किया गया। यह अध्ययन वर्ष 2019 के दौरान पूर्व मेदिनीपुर जिले के 5 अवतरण केन्द्रों, जैसे दिघा मोहना, पेतुआघाट, शंकरपुर, सौला और न्यू दिघा, में आयोजित किया गया। उच्चतम मछली उत्पादन और महिलाओं की सहभागिता के कारण इन स्थानों को अध्ययन के लिए जानबूझकर चुना गया। संग्रहित आंकड़ों का विश्लेषण किया गया। आंकड़ों के विश्लेषण से यह व्यक्त हुआ कि पूर्व मेदिनीपुर में महिलाओं का उच्चतम प्रतिशत मछली प्रसंस्करण में (50.92%) था और इसके बाद श्रम कार्यों (30.13%), विपणन (28.1%) और जाल की मरम्मत कार्यों (19.13%) में अधिक सहभागिता देखी गयी। दिघा और शंकरपुर में नगण्य प्रतिशत में महिलाएं तटीय क्षेत्रों में फंदों से मत्स्यन में लगी हुई हैं। वे मुख्यतः मछलियों और झींगों को पकड़ती हैं। लेकिल इस तरह के कार्यों को मान्यता नहीं दी जाती थी। इसलिए महिलाओं का श्रम काफी हद तक अगोचर रहता है।

स्थानीय बाजारों में मछली का विपणन करते हुए भी महिलाओं को देखा जा सकता है। अतः महिलाएं शहरी और ग्रामीण प्रांतों के उपभोक्ताओं को मछली उपलब्ध कराती हुई उत्पादकों और उपभोक्ताओं के बीच एक

चित्र 3. प्रसंस्करण के बाद सूखी मछली की गुणता की जांच

चित्र 4. प्रसंस्करण के बाद सूखी मछली का परिवहन

प्रमुख कड़ी स्थापित करती हैं। अधिक रूप से महिला बिक्रेताओं को 30-65 के आयु वर्ग में पाया जाता है, जिनकी आय मछली की उपलब्धता और गुणता तथा मूल्य सौदा करने में उनकी कुशलता के आधार पर भिन्न होती है। हालांकि, दिघा के मात्स्यिकी क्षेत्र में 40-50 आयु वर्ग की महिलाओं की बहुलता देखी जा सकती है। अधिकतर महिलाएं (32.08%) घर में ही घरेलू काम करके रहती हैं। अन्य महिलाएं श्रम कार्यों (26.14%) में, खेतीबारी (14%) में, मछली सुखाने के कार्यों (11.32%) में, प्रसंस्करण प्लान्टों (6.35%) में, छोटी प्रसंस्करण इकाइयों में छंटाई और छिलका उतारने के कार्यों (5.25%) में, मछली बाज़ारों (2.64%) में, मत्स्यन कार्य (1.32%) में और बर्फ की फैक्टरी (0.9%) में कार्यरत हैं। दिघा मोहना में प्रसंस्करण इकाइयाँ अधिक संख्या में (630) उपलब्ध होने के कारण अधिकतर महिलाएं इन इकाइयों में मज़दूरी श्रमिकों के रूप में काम करती हैं। वे मछली प्रसंस्करण, धूप में सुखाना और नमक डालना आदि कार्यों में भी सक्रिय रूप से लगी हुई हैं। वे मछलियों की छंटाई, ग्रेडिंग, छिलका उतारना, सिर काटना, आंत निकालना, टुकड़ा करना, पैकिंग आदि कार्यों में भी लगी हुई हैं। प्रसंस्करण प्लान्टों में ओड़ीषा, बिहार और असम जैसे अन्य राज्यों से प्रवासी महिलाएं काम करती हुई पायी जाती हैं, क्योंकि उन्हें ये काम करने के लिए प्रशिक्षित किया गया है। प्रसंस्करण प्लान्टों में अन्य आयु ग्रुप की तुलना में 30-40 की आयु की महिलाओं का प्रतिशत अधिक था (44%), जिसके बाद 20-30 (34%), 40-50 (12%) और 60 से ऊपर (7%) के आयु ग्रुप की महिलाएं थी।

भारत के समूचे तटीय क्षेत्रों में समुद्री मछली सुखाना बहुत ही सामान्य कार्य है। पश्चिम बंगाल में यह व्यवहार 24 परगानास और पूर्व मेदिनीपुर तक सीमित है। यह तटीय गरीब लोगों के लिए रोज़गार का सृजन करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। दिघा मोहना मछली अवतरण केन्द्र के पास कई छोटे और मध्यम आकार के मछली सुखाने के यार्ड स्थित हैं, जो भारत के कई भागों, मुख्यतः असम, आंध्रा प्रदेश, ओड़ीषा और बिहार और इनके अतिरिक्त बंगलादेश और मियानमर जैसे विदेशों में सूखी मछली की आपूर्ति करते हैं। पश्चिम बंगाल में सूखी मछली के क्षेत्र में मछुआरिन प्रमुख शक्ति के रूप में बढ़ गयी हैं। कई मछली सुखाने के यार्डों में ये मछुआरिन दिन में 5-6 घंटों तक काम करती हैं और मासिक पारिश्रमिक के रूप में प्रति माह 9000 से 10,500 रुपए तक कमाती हैं। इसके अतिरिक्त कुछ मछुआरिन बाज़ारों में स्थानीय बिक्रेताओं के रूप में फीता मीन, एंचोवी, पोलीनेमिड, सयनिड, बम्बिल, स्नाप्पर, क्लूपिड, चिंगट, पाम्फ्रेट, हिल्सा, मल्लेट, पेर्च, मिल्कफिश, समुद्री बास, छोटी सुरा मछली और रे

चित्र 5. बाज़ार में सूखी मछली बेचने वाली महिला

चित्र 6. बाज़ार में सूखी मछली बेचने वाली महिला

चित्र 7. चिगटों के छीलने के काम में लगी हुई महिलाएं

चित्र 8. केकड़ों को बांधने के काम में लगी हुई महिलाएं

मछली जैसी विविध मछलियाँ बेचती हैं। सूखी मछली के लिए एक अच्छा विपणन चैनल है, जिसमें मछली प्रसंस्करण करने वाले, थोक व्यापारी और खुदरा व्यापारी और उपभोक्ता सम्मिलित हैं। मानसूनोत्तर अवधि के दौरान सूखी मछली का व्यापार अच्छी तरह होता है, इसी समय ये मछुआरिन सूखी मछली यार्डों में विभिन्न प्रकार की मछलियों को बांधने और सुखाने के कार्य में लगी होती हैं। सूखी मछली का मूल्य मछली की उपलब्धता, आकार और गुणता के अनुसार बदलता है। इस तरह, सूखी मछली का उद्योग मछुआरिनों को अपने घरेलू खर्चों, बच्चों की शिक्षा, चिकित्सा की खर्चों और अन्य कार्यों जैसी आजीविका का समर्थन करने के लिए आवश्यक अवसर प्रदान करता है। विस्मय की बात यह है कि दिघा में, नीलामी और जाल की मरम्मत के कार्यों में कोई भी महिला शामिल है। आर्थिक रूप से पिछड़ी अवस्था की महिलाएं मुख्यतः झींगा छीलने और केकड़ा बांधने के कार्यों में लगी हुई हैं और कभी-कभी वे विभिन्न तरह के स्वास्थ्य के खतरों से प्रभावित होती हैं। उपरोक्त गतिविधि का पारिश्रमिक बहुत कम है (प्रति किलो केकड़े के लिए 1-2 रुपए), इसलिए इस थकाऊ काम से प्रतिदिन वे 200-250 रुपए कमाती हैं। अवतरण केन्द्रों के पास के बाज़ारों में मछली टुकड़ा करने वालों को प्रति किलो मछली काटने के लिए 10 रुपए मिलते है, इस तरह ये महिलाएं प्रति दिन 50-60 रुपए कमाती हैं।

पूर्व मेदिनीपुर में मात्स्यिकी क्षेत्र से जुड़ी हुई महिलाएं शिक्षा से वंचित हैं, वे आर्थिक संसाधनों की पहुँच की कमी, निर्णय लेने से दबायी गयी, कम भुगतान, तकनीकी ज्ञान एवं बाज़ार सूचनाओं की कमी, अपना विचार प्रकट करने के मंच से वंचित और आजीविका के विकल्प के अवसरों की कमी का अनुभव कर रही हैं, इसके अतिरिक्त कुछ महिलाएं घरेलू हिंसा के शिकार भी होती हैं। फिर भी, महिलाओं के निर्णय लेने की प्रक्रिया को छोड़कर, मात्स्यिकी की गतिविधियों में उनके महत्वपूर्ण योगदान को भूलना नहीं चाहिए। महत्वपूर्ण क्षेत्रों में महिलाओं की विशेषता और ज्ञान को दबा दिया जाता है। विभिन्न प्रसंस्करण इकाइयों में काम करने वाली महिलाएं लंबे समय की मेहनत के बावजूद बहुत कम वेतन के लिए काम कर रही हैं। पड़ोसी राज्यों के प्रवासी मज़दूर भी इस क्षेत्र में श्रमिकों के बीच स्पर्धा करते हैं। मत्स्यन रोध के दौरान महिला श्रमिक काम रहित होती हैं। मछली बिक्रेताओं को स्थानीय प्राधिकरण द्वारा मछली बेचने के लिए स्थायी स्थान और लाइसेन्स नहीं मिल जाता है। बाज़ार में मछली के मूल्य में उतार-चढ़ाव होने पर उनको सबसे अधिक नुकसान होता है। परिवार की जिम्मेदारियों और सामाजिक तथा सांस्कृतिक रोधों के कारण वे अपने घरों के पास के बाज़ारों को चुनते हैं, जो उनको बेहतर विपणन अवसरों से प्रतिबंधित करते हैं। दूर के बाज़ार तक जाने के लिए

चित्र 9. बाज़ार में मछली साफ करने में लगी हुई महिलाएं

चित्र 10. मछली और चिंगट पकड़ में लगी हुई महिलाएं

उनके पास परिवहन की सुविधाओं की कमी है और मछली को संरक्षित करके रखने के लिए बर्फ के बक्स नहीं हैं। परिवार के अन्य खर्चों का वहन कराने के कारण उनके पास निवेश के लिए बहुत कम पैसा बच जाता है। सरकार या स्थानीय निकायों से भी उनको कोई समर्थन नहीं मिलता है। ये महिलाएं न केवल सभी नियमित घरेलू कार्यविधियों में शामिल होकर अपने परिवार के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं, बल्कि ग्रामीण समुदाय को प्रोटीन के सबसे सस्ते स्रोत की आवश्यकता को पूरा करती हुई आय का अतिरिक्त स्रोत भी उत्पन्न करती हैं। विशेष रूप से, महिलाओं के पास खाद्य संग्रह, तैयारी और प्रबंधन के बारे में बच्चों को शिक्षा देने की प्रमुख जिम्मेदारी है, जो संसाधनों के उपयोग और पारंपरिक प्रबंधन पर उनके ज्ञान को प्रसारित करने में मदद करती है। महिलाओं के सशक्तीकरण से उनकी आगामी पीढ़ी का सफल विकास होगा। इसलिए अनुसंधानकारों को महिलाओं की विशेष आवश्यकताओं की पहचान और प्रौद्योगिकी के विकास पर ध्यान देना चाहिए, जिसका ये महिलाएं अपने को आर्थिक रूप से सशक्त बनाने के लिए उपयोग कर सकती हैं।

वर्तमान परिदृश्य में, मात्स्यिकी क्षेत्र में महिलाओं को पुरुषों की अपेक्षा कई कार्यों को संभालने में उनके अनुभव, कुशलता और ज्ञान के कारण विश्व स्तर पर महत्व दिया गया है। फिर भी, पूर्व मेदिनीपुर में किसी भी महिला को सरकार की एजेन्सियों द्वारा आयोजित बैठकों में भाग लेती हुई देखा नहीं जा सकता, जिससे पता चलता है कि मात्स्यिकी से जुड़ी हुई कार्यविधियाँ पुरुष प्रधान है, और संसाधन प्रबंधन के लिए योजना बनाने और निर्णय लेने में महिलाओं की कोई भूमिका नहीं है। इसलिए समुदाय और सरकार दोनों के स्तरों पर महिलाओं की सहभागिता को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। इस क्षेत्र की महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए ग्रामीण महिला विकास कार्यक्रमों को लाया जाना चाहिए। साथ-साथ, सरकार के स्तर की नीतियों को मात्स्यिकी के क्षेत्र की महिलाओं की ज़रूरतों को पहचानना, उनकी सेवाओं को समझना और महत्व देना चाहिए और निर्णय लेने के सभी अवसरों में उनको सशक्त बनाना चाहिए। महिलाओं का आत्मविश्वास बढ़ाने के उद्देश्य से उनके लिए विशेष रूप से क्षमता वर्धन पर प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया जाना चाहिए। बेहतर आय के लिए कुशलता विकास में प्रशिक्षण, सभी तरह की स्वच्छता से सुरक्षित और गुणतापूर्ण कार्य करने की स्थिति प्रदान करके महिला सशक्तीकरण की अत्यधिक आवश्यकता है, ताकि पूर्व मेदिनीपुर में मछुआरिनों की सामाजिक आर्थिक स्थिति में सुधार हो सके।